

November 2024

Monthly Magazine  
Year 10 Issue 11

# Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार  
*In Giving We Believe*

# सतयुग



## हमारा उद्देश्य

“हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो  
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व  
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।”

### वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रातः ११ वजे से ११.३० वजे तक

### फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

# नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ  
राम राम मधुर धुन वहाँ  
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,  
जीवन में लाता सबके जो बहार  
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,  
बनाता सतयुग सा संसार  
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार  
हमारा सन.आर.सस.पी., प्यारा सन.आर.सस.पी.  
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता  
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता  
परोपकार का भाव जगाता  
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता  
सत की करता अंगीकार  
बनाता सतयुग सा संसार  
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार  
मुस्कान के राज बताता,  
तन, मन, धन से देना सिखलाता  
हमको जीना सिखलाता  
घर-घर प्रेम के दीप जलाता  
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता  
बनाता सतयुग सा संसार  
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार  
सन.आर.सस.पी., सन.आर.सस.पी.

## पावन वाणी



प्रिय नारायण प्रेमियों,

॥ नारायण नारायण ॥

जीवन का सार है प्रेम। मैं अपनी बात आध्यात्म गुरु राघव के माध्यम से कहूँगी-

यदि आप किसी से प्रेम करते हैं तो आपको उसकी पसंद नापसंद का आदर करना होगा, ध्यान रखना होगा। आत्म केंद्रित होने के बजाय उन पर ध्यान केंद्रित करें जिनसे आप प्यार करते हैं। जब आप ऐसा करते हैं तो आप उनको जैसे हैं वैसे ही स्वीकारने लगते हैं, परिणाम यह होता है कि आपके संबंध घनिष्ठ होते जाते हैं। श्री राघव कहते हैं, अपना प्रेम दर्शाने का, जताने का, सीधा सरल उपाय- यदि आप किसी से प्रेम करते हैं तो देखें कि आप उस व्यक्ति के जीवन को कैसे आसान बना सकते हैं? जैसे मैं जब भी घर से बाहर जाता हूँ मुख्य दरवाज़े की चाबी अपने साथ लेकर जाता हूँ ताकि जब लेट नाईट में घर लौटूँ तो मुझे किसी को घर की घंटी बजा कर परेशान न करना पड़े। साथ ही पूरे दिन का अपना प्रोग्राम कि मैं कब घर से बाहर जाऊँगा, कब घर वापस आऊँगा, मैं क्या नाश्ता करना चाहता हूँ, क्या टिफिन लेकर जाऊँगा सब पहले से ही बता देता हूँ ताकि उन्हें सुविधा रहे।

जिनसे हम प्रेम करते हैं, जो हमारे अपने हैं, उनके प्रति हमें यह रवैया रखना है कि मैं सामने वाले को क्या दे सकता हूँ न कि मुझे क्या मिलेगा। जो भी हमें उनसे मिलता है उसे हमें प्रेम से स्वीकारना है। अक्सर हम रिश्तों में बहुत उम्मीद लगा लेते हैं और समझ लेते हैं कि जो हम से बहुत प्यार करते हैं वो हमारी खामोशी को भी समझेंगे। मगर हम यह भूल जाते हैं कि हम सब इंसान हैं कोई अंतर्द्वारी नहीं, हमें अपनी भावनाओं को शब्दों में अभिव्यक्त करना पड़ता है। हम ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस सामर्थ्य का उपयोग करने के लिए बने हैं जो किसी और जीव जंतु को प्राप्त नहीं। अपने प्यारों का जीवन आसान बनाने के लिए उन्हें आज़ाद कर दें। इस बात से उन्हें हर वक्त हर चीज़ की सफ़ाई नहीं देनी पड़ेगी। हर वक्त हर चीज़ की सफ़ाई देना थकावट से भर देता है, खीज से भर देता है और रिश्तों को तनाव से भर देता है। राघव ने यह कहते हुए अपनी बात पूरी की, 'हम जिनसे प्रेम करते हैं उन के लिए हम कितना भी करें थोड़ा ही है। हमेशा आपके भीतर यह विचार चलते रहना चाहिए कि मैं इनके लिए और क्या कर सकता हूँ।'।

पूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम आज़ाद लिखते हैं, 'मेरे पास तो प्रेम करने के लिए ही समय कम पड़ता है, पता नहीं लोग नफ़रत के लिए कहाँ से समय निकाल लेते हैं।'।

शेष कुशल

R. Modi

:- संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

:- प्रधान कार्यालय :-

नारायण भवन

टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड, गोरेगांव ( प. ), मुंबई

:- क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पुनम गाडिया	9839582411
बिहार	पुनम दुधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनु गड्डानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली ( नोएडा )	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली ( नोएडा )	मेधा गुप्ता	9968696600
दिल्ली ( डब्ल्यू )	रेनु बिज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुन	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालगांव	आरती चौधरी	9673519641
मोरबी	कल्पना चोरीडिया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंगोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरविंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मुद्दु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सुरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर ( राजस्थान )	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबलौ	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झंवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660
गुडगांव	मेधा गुप्ता	9968696600
यवतमाल	वंदना सूचक	932521889
अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम		
ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

## संपादकीय

प्रिय पाठकों,

॥ नारायण नारायण ॥

पिछले दिनों, किसी बात पर मन अशांत-सा था। वॉक करते समय निरन्तर उसी विषय पर मन चल रहा था। चाल मंथर सी थी और मन हतोत्साहित-सा था। तभी कानों में प्रेम, प्रेम की ध्वनि सुनाई दी। एक माँ अपने पाँच साल के बच्चे प्रेम को आवाज़ दे रही थी। मैंने प्रेम सुना, प्रेम देखा, भागता हुआ प्रेम माँ के गले लग गया। मेरा मन प्रेम के उस प्रेम को देखकर, महसूस करके, प्रेम के प्रतिसाद से नहा उठा। मंथर चाल तेज़ हो गई और हतोत्साहित सा मन खुशी, आनंद, उत्साह से भर गया। प्रेम से सारबोर हो गया। कानों में आवाज़ गूँजी, मैं प्यार से सब सम्भाल लूँगी।

हमारे अस्तित्व की मूलभूत अनुभूति है प्रेम। प्रेम ही वो भाव है जिस पर यह प्रकृति, यह दुनिया यह समस्त ब्रह्मांड टिका हुआ है।

बस मन हुआ चलो अपने पाठकों से इस बार प्रेम के विषय में बात की जाये और टीम सतयुग लग गई ढूँढ़ने, सोचने, मनन करने और गुनने में। जो कुछ हाथ आया सब आपके समक्ष, इस अंक में।

आप सब सदैव प्रेम से सारबोर होकर इस धरा को प्रेम से सारबोर करते रहेंगे, इन शुभकामनाओं के साथ-

आपकी अपनी  
संध्या गुप्ता

## अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैकॉक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजाह	शिल्पा मंजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिन ओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

## अमेरिका

संस्थानाती	मेधा अग्रवाल	+1(516)312-4189
कनेक्टिकट	ऊष्मा जोशी	
फ्लोरिडा	बीना पटेल	+1(904)343-9056
शिकागो	चाँदनी ठक्कर	+12247700252
कैलिफोर्निया	सुशीला तयाल	+12247700252
न्यू जर्सी	शैली अग्रवाल	+912012842586

॥ नारायण नारायण ॥



जब सृष्टि के सृजन कर्ता को अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति को आकार देने का मन हुआ तो मानव का जन्म हुआ। अपनी इस कृति का सृजन किया तो जो सर्वोत्तम उपहार दिया वो है प्रेम। विशुद्ध प्रेम। मानवीय अंतरात्मा की भूख है प्रेम। इस क्षुधा की पूर्ति के लिए ही मनुष्य अपने मित्रों, प्रियजनों और परिजनों का परिवार व उनकी परिधि बढ़ाता है, प्रेम का आदान-प्रदान दोनों ही पक्षों को, प्रेम करने वाले और प्रेम पाने वाले दोनों को शक्ति प्रदान करता है। सबसे बड़ी शक्ति जो कि मानव जाति कभी भी हासिल कर सकती है वह है प्यार की शक्ति, प्रेम की शक्ति। कार्य की शक्ति, आगे बढ़ने और आगे बढ़ाने की शक्ति, अपना सर्वोत्तम देने की शक्ति। जहाँ प्रेम का आदान-प्रदान नहीं हो पाता है, वहाँ भौतिक सुख-सुविधाओं का, साधनों का बाहुल्य होते हुए भी किसी को संतुष्टि नहीं मिल पाती। प्रकृति सभी को निश्चल प्रेम देती है।

उगता हुआ सूरज यह भेदभाव नहीं करता कि वो किन फूलों पर अपनी रोशनी डालेगा और किन पर नहीं। वो सभी पर अपना प्रकाश एक समान बिखेरता है। इसीलिए, गुलाब का फूल हो या जंगली घास, सभी को एक समान रोशनी मिलती है। ईश्वर भी अपने प्रेम से हम सभी को समान रूप से रोशन करता है। हमारे बालों, त्वचा, या आंखों का रंग चाहे जो भी हो, वो सबको एक समान प्रेम देता है। जब हम अपनी आत्मा का अनुभव कर लेते हैं और खुद को आत्मा के रूप में ही देखने लगते हैं, तो हम भी सबसे प्रेम करने लगते हैं।

आज विश्व को प्रेम की बहुत आवश्यकता है। जिस तरह हम चाहते हैं कि कोई हमसे प्रेम करे, उसी तरह हमें भी अपने आसपास के लोगों को प्रेम देना चाहिए। सच्चे प्रेम का अर्थ है सबसे प्रेम करना।

प्रेम दूसरों के लिए सहानुभूति, करुणा, और देखभाल की भावना को दर्शाता है।

सच्चा प्रेम निःस्वार्थ होता है, इसमें किसी भी तरह की अपेक्षा नहीं होती है। सच्चा प्रेम सहानुभूति और करुणा की भावना को दर्शाता है। सच्चा प्रेम दूसरों को वैसे ही स्वीकार करता है, जैसे वे हैं। सच्चा प्रेम दूसरों को सहारा और समर्थन देता है।

सच्चा प्रेम विश्वास और ईमानदारी पर आधारित होता है।

इन मायनों में, सच्चा प्रेम जीवन को समृद्ध और अर्थपूर्ण बनाता है।

प्रेम के सम्बन्ध में अब तक जो प्रयोग और शोध अनुसंधान हुए हैं उनसे यही निष्कर्ष निकलता है कि प्रेम की भावना मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। न्यूयार्क, अमेरिका के डॉक्टर रेनी स्पिट्ज ने ऐसे छोटे बच्चों का अध्ययन किया जिनमें विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का विकास आयु के अनुपात से कई गुना अधिक था। डॉ. स्पिट्ज ने उनकी पारिवारिक परिस्थितियों का अध्ययन किया तो विदित हुआ कि उनमें से निन्यानवे प्रतिशत ऐसे थे जिन्हें अपनी माँ का प्रेम नहीं मिला था, या तो उनकी माँ का देहावसान हो चुका था या सामाजिक परिस्थितियों ने उन्हें माँ से अलग कर दिया था। इस प्रारम्भिक अन्वेषण ने डॉ. रेनी स्पिट्ज में प्रेम भावना के प्रभाव और प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण करने की प्रेरणा उत्पन्न कर दी।

इस प्रयोग के लिए उन्होंने दो भिन्न सुविधाओं वाले संस्थानों की स्थापना की। एक में ऐसे बच्चे रखे गए जिन्हें



थोड़ी-थोड़ी देर में माँ का वात्सल्य और दुलार मिलता था। वे जब भी चाहें, तभी अपनी माँ को पुकारें उन्हें अविलम्ब स्नेह, सुलभ किया जाता था और दूसरी ओर वे बच्चे रखे गए जिनके लिए बढ़िया से बढ़िया भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा, क्रीड़ा के बहुमूल्य साधन उपलब्ध थे, परन्तु उन्हें मातृ प्रेम के स्थान पर एक संरक्षिका भर मिली थी। इतने बच्चों को प्रेम और दुलार वह अकेली संरक्षिका कहाँ से दे पाती? हाँ उन बच्चों को नर्स से कभी-कभी झिड़कियाँ अवश्य मिल जाती थी। यही था उन बच्चों का जीवनक्रम। एक वर्ष बाद दोनों संस्थानों के बच्चों का परीक्षण किया गया। उनकी कल्पना शक्ति की मनोवैज्ञानिक जाँच की गई, शारीरिक विकास की माप, सामाजिकता, संस्कार, बुद्धि चातुर्य और स्मरण शक्ति का परीक्षण किया गया। दोनों संस्थानों के बच्चों में आश्चर्यजनक अन्तर पाया गया।

जिन बच्चों को साधारण आहार दिया गया था, जिनके लिए खेलकूद, रहन-सहन और अन्य सुविधा साधन उतने अच्छे नहीं मिले थे किन्तु माँ का प्रेम प्रचुर मात्रा में मिला था; पाया गया कि उन बच्चों की कल्पना शक्ति, स्मरण शक्ति, सामाजिक सम्बन्धों के संस्कार तथा बौद्धिक क्षमता के विकास की गति बढ़ गई। दूसरे संस्थान के बच्चों की, जिनके लिए भौतिक सुख-सुविधाओं की भरमार थी, पर मातृ प्रेम के स्थान पर स्नेह शून्यता थी, उनकी विकास दर घट गई। पहली संस्था के बच्चों के शारीरिक विकास के साथ-साथ स्वास्थ्य और उनके शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का भी आश्चर्यजनक विकास हुआ। इस संस्था में रखे गये १३६ बच्चों में से कोई ही कभी कदा बीमार पड़ा जबकि दूसरे संस्थान में ३८ प्रतिशत बच्चे बीमार पड़े।

प्रेम और स्नेह की शक्ति तथा प्रभाव को लेकर डॉ. फ्रीट्स टालबोट के अनुभव भी कम विस्मयजनक नहीं हैं। एक बार डॉ. फ्रीट्स जर्मनी गये। वहाँ उन्होंने ड्यूरोल्फोर्ड नगर का बाल अस्पताल देखा। इस अस्पताल में उन्होंने एक वृद्ध स्त्री देखी जो देखने में तो आकर्षक नहीं थी, परन्तु विलक्षण शांतिप्रद सौम्यता और मुस्कान से भरपूर थी। हर समय उसकी गोदी में कोई न कोई बच्चा खेल रहा होता था। टालबोट ने उस स्त्री को देखा तो उसके बारे में जानने की जिज्ञासा अनायास उत्पन्न हुई। उन्होंने अस्पताल के डायरेक्टर से उस स्त्री का परिचय पूछा तो डायरेक्टर ने बताया कि वह तो अन्ना है श्रीमान जी ! डाक्टरों की भी डाक्टर। उसके पास एक ही चिकित्सा है - प्रेम। जिन बच्चों को हम लाइलाज घोषित कर देते हैं, जिनके उपचार का कोई तरीका हमें नहीं सूझता, अन्ना उन्हें भी अच्छा कर देती हैं।

क्वीप यूनिवर्सिटी, आण्टोरिया (कनाडा) के वैज्ञानिकों ने 'प्राणियों पर प्रेम का भौतिक प्रभाव' विषय पर खोज की और उसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए हैं। एक महिला जो चूहों के साथ प्रेम से भरा व्यवहार करती थी उस महिला के हाथों विषाक्त दवाई खाने का केवल २०% चूहों पर असर हुआ। महिला के प्रेम ने विषाक्त दवा का असर नहीं होने दिया।

प्रेम और सद्भावनाओं की शक्ति का सबसे बड़ा और जीता जागता प्रमाण है श्रीमती डोरिस मुन्डे पचास वर्ष की वृद्धा, शरीर से सामान्य महिलाओं की तरह साधारण; किन्तु भावनाओं की दृष्टि से असाधारण श्रीमती डोरिस एटलस निकालकर देखती हैं कि वह स्थान वह देश किस महाद्वीप में है, जहाँ सूखा या अकाल पड़ा है। इसके बाद

वह ध्यान लगाकर बैठ जाती है वह अपने सम्पूर्ण हृदय से, परिपूर्ण एकाग्रता और तल्लीनता के साथ भावना करती है कि मेरी अजस्र शक्ति बादलों में घुल रही है बादलों चलो, तुम्हें उस क्षेत्र में बरसना है। बादलों ! लो आगया वह सूखा क्षेत्र जहाँ तुम्हें बरसना है। बरसो ! बरसो !! जल्दी बरसो ताकि प्यास से सूखे कण्ठ वाले लोगों की प्यास बुझ सकें। सूखी धरती गीली हो सके। तुम्हें बरसना पड़ेगा, बादलों तुम्हें बरसना पड़ेगा। लो बरसो ! चलो बरसो।

सम्पूर्ण मन, प्राण से डोरिस मुन्डे इस तरह की भावनाएँ करती हैं और बादलों के साथ ही अपनी चेतना को घुला मिला देती हैं। पानी बरसने लगता है। लोग खुशी से नाचने लगते हैं। श्रीमती डोरिस का कहना है कि सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना के आगे बादल तो क्या भगवान को भी झुकना पड़ता है।

व्यक्तित्व को ढालने और उसे उन्नत करने के लिए जो कुछ आवश्यक है उसमें प्रेम तथा सद्भावनाओं का विकास प्रथम सीढ़ी है। बिना भावनाओं का विकास किये और उन्हें उदात्त तथा परिपक्व बनाए कोई व्यक्ति आत्मिक उन्नति कर ही नहीं सकता।

प्रेम और सद्भावनाएँ एक ऐसी सम्पदा है जो दूसरों पर ना केवल अपना प्रभाव छोड़ती हैं बल्कि उन्हें बदलती उनकी अन्तःस्थिति में हेर-फेर भी करती हैं।

प्रेम विकास का अनिवार्य अंग है।

**अयोध्या मालवानी को उत्तम स्वास्थ्य और आजीवन  
सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।**

**सुषमा तापड़िया और बनवारी लाल तापड़िया को  
विवाह वर्ष गाँठ (३० नवंबर) पर सुख, शांति, सेहत समृद्धि से भरे  
सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।**



## ज्ञान मंजूषा

॥ ५ ॥

ज्ञान मंजूषा के इस स्तंभ में हम विभिन्न सत्संगों में विभिन्न जीवन मूल्यों के बारे में राज दीदी द्वारा व्यक्त किए विचार लेकर हाज़िर हैं -

### ईमानदारी

ईमानदारी के बारे में मिस्टर ललित के माध्यम से राज दीदी ने साझा किया। मिस्टर ललित जो कि एक Chartered Accountant हैं, उन्होंने उनके कंपनी के MD की ईमानदारी की एक कहानी साझा की। मिस्टर ललित आगे लिखते हैं कि उनकी ईमानदारी को देखकर मुझे अपनी दादी की याद आती है। मिस्टर ललित लिखते हैं कि मेरी दादी कहा करती थी, एक राजा था और उसका एक खजानची (cashier) था। मोमबत्ती की लाइट में बही खाता लिखता था क्योंकि उस ज़माने में बिजली का आविष्कार नहीं हुआ था। खजानची अपना बही खाता लिख रहा था इतने में दो व्यक्ति उससे मिलने के लिए आये। उसने कहा कि थोड़ी देर बैठ जाओ, मैं मेरा काम कर रहा हूँ। जैसे ही उनका काम खत्म हुआ उन्होंने मोमबत्ती बुझा दी। उन्होंने वह मोमबत्ती बुझाई और दूसरी जला दी। जो दो लोग आए थे उन्हें बड़ा अजीब लगा कि जलती हुई मोमबत्ती को बुझा कर दूसरी मोमबत्ती जला दी। उन्होंने इसका कारण जानना चाहा। कैशियर का जवाब था कि जब आप लोग आये थे मैं राज्य का काम कर रहा था, इसलिए राज्य के खर्चे से आई मोमबत्ती जला रखी थी। अब मैं आप से बात कर रहा हूँ, ये मेरा पर्सनल काम है, अब जो मोमबत्ती जल रही है वह मेरे खर्चे से आई हुई है। राज्य के खर्चे से आई हुई वस्तुएं वापरता हूँ तो मैं विश्वास योग्य नहीं रह जाता, जब मैं राज्य का काम करूँगा उस मोमबत्ती को जलाऊंगा, अब मैं पर्सनल काम कर रहा हूँ तो इस मोमबत्ती को जला रखा है। इनका जीवन जीने का तरीका ही कुछ अलग है। मिस्टर ललित लिखते हैं कि मैं बचपन से ही ईमानदारी की कहानी सुनी हुई है और अब ईमानदार MD का संग मिल गया है तो मैं ईमानदारी में ही राजा बन गया हूँ। मैंने तो ठान लिया है कि ईमानदारी से भरा हुआ जीवन ही जिऊंगा। आपका क्या इरादा है ?

**ईमानदारी के रास्ते से हटने के नुकसान:-** दीदी ने संत स्वामी श्री रामसुख जी महाराज के उदाहरण से ईमानदारी के रास्ते से हटने के नुकसान बताते हुए कहा:-

स्वामी रामसुख जी महाराज एक पहुंचे हुए संत थे। उनके लिए कहा जाता है कि भगवान श्री कृष्ण के साथ वे रूबरू बातचीत करते थे। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि यदि आपको ५०० रूपए का काम मिला है और आप उसे ईमानदारी से करते हैं तो उस ५०० रूपए पर आपका हक है। लेकिन ज़रा सा भी लालच यदि आपके भीतर आ गया और आपने उस ५०० में ३०० बढ़ा दिए और उसे काम के ८०० रूपए ले लिए तो आपको खुशी तो बहुत होगी, परंतु वह ३०० रूपए की एक्स्ट्रा रकम अपने साथ क्या-क्या लाती है यह आपको देखना होगा। **ये रकम अपने साथ दुःख, दरिद्रता, अशान्ति, रोग, शोक, पतन- ये पूरा नेगेटिव पैकेज डील लाती है। यह एक package deal है जो आपको भुगतनी पड़ती है।** Suppose आपके ५०० रूपए हुए और आपने ५०० ही लिए तो यह ५०० अपने साथ पैकेज डील में लाएगा-बरकत, बढ़ोत्तरी, प्रचुरता। यह पैकेज डील इसके साथ चलती है और **यदि आपने ईमानदारी के साथ वफ़ादारी भी अपना ली तो यह वफ़ादारी आपके जीवन में**

॥ नारायण नारायण ॥



लाती है सेहत और समृद्धि। ईमानदारी और वफादारी मानो लक्ष्मी जी का रूप है। जब इन दो चीज़ों को आप अपने जीवन में अपनाते हैं तो मां महालक्ष्मी जी का हाथ सदैव आशीर्वाद के रूप में आपके माथे पर टिका हुआ रहता है।

राज दीदी ने आगे मिस्टर केशव के माध्यम से बताया, एक दिन की बात है मिस्टर केशव अपने दो बच्चों को लेकर circus दिखाने गए। जब टिकट काउंटर पर पहुंचें तो वहाँ एक बड़ा सारा पोस्टर लगा हुआ था। तीन से पांच साल हाफ टिकट, पांच साल से ऊपर आपको फुल टिकट लेनी होगी। जब केशव ने बोर्ड देखा कि तीन साल के नीचे के बच्चे मुफ्त हैं पर ये साढ़े तीन साल का है, इसकी हाफ टिकट लेनी पड़ेगी और ये साढ़े पांच साल का है तो इसका मुझे full ticket लेना होगा। ५०० का नोट निकाला, काउंटर पर धरा और सामने वाले से कहा कि दो फुल टिकट और एक हाफ टिकट। काउंटर पर बैठे व्यक्ति ने दोनों बच्चों पर नज़र डाली और कहा कि साहब ये कितने साल का है? बताया साढ़े तीन साल का है। ये कितने साल का है? साढ़े पाँच साल का है। टिकट वाले ने कहा कि इतना पैसा क्यों लगाते हो, टिकट चेक करने वाला आगे खड़ा है। आप उसे कह दीजिएगा कि छोटा वाला बच्चा ३ साल का नहीं हुआ है ५ साल के नीचे का है और मैं आपको बड़े बच्चों के लिए हाफ टिकट दे देता हूँ, किसी को भी पता नहीं चलेगा। मिस्टर केशव ने टिकट वाले से कहा कि ये साढ़े तीन साल का है यह इसे पता है और मुझे पता है, ये साढ़े पाँच साल का है यह इसे भी पता है और मुझे भी पता है। उस टिकट चेकर को पता हो या ना हो मगर मुझे पता है इसलिए आप दो फुल टिकट और एक हाफ टिकट ही दे दीजिए। आज जब बच्चों ने अपने पिता केशव को ईमानदारी भरा व्यवहार करते हुए देखा है तो जीवन भर इनके मन में छाप रहेगी कि मेरे पिता ईमानदार हैं। **जहाँ ईमानदारी शब्द आ जाता है तो किसी व्यक्ति के साथ ऑटोमैटिकली पॉज़िटिव चीज़ें जुड़ जाती हैं।** अब आपकी चॉइस है कि आपको कौन सा रास्ता पकड़ना है।

### दूसरों की बिना मांगे मदद करना (अपना सर्वोत्तम देना) - राधिका के मुख से

सी ए के एग्जाम की तैयारी के लिए मैंने कॉलेज से अवकाश लिया था। बात अक्टूबर २०१३ की है। छह महीने कॉलेज में अनुपस्थित रहने के बाद अब मुझे कॉलेज जॉइन करना था और मैं बेहद घबराई हुई थी कि पिछले छह महीने से मैं कॉलेज नहीं गई थी तो जो पढ़ाई हुई उसे मैं कैसे कवर अप कर पाऊंगी? कैसे मेरे नोट्स तैयार हो पाएंगे? जब मैं अपनी क्लास में अपनी बेंच के पास पहुंची तो मैंने देखा कि छह नोटबुक मेरी बेंच के ऊपर रखी हुई थी, व्यवस्थित तरीके से कवर की हुई। मुझे देखकर आश्चर्य हुआ कि बेंच तो मेरी है, किसने अपनी नोटबुक यहाँ पर रखी !

मैंने देखा हर नोटबुक पर विद्यार्थी की जगह मेरा ही नाम था लेकिन भीतर की हैंड राइटिंग मेरी नहीं थी। छह की छह नोटबुक्स की हैंडराइटिंग अलग-अलग थी और मैंने ऐसी कोई नोटबुक बनाई नहीं थी, तो फिर मेरे नाम से यह नोटबुक्स यहाँ पर कैसे आ गई ? कुछ ही समय बीता होगा कि मेरी सहेलियाँ सरप्राइज़ देते हुए वहाँ पहुँच गईं। उनकी बातों से मुझे पता चला कि मेरी अनुपस्थिति में उन्होंने आपस में डिसाइड कर लिया था कि जब मैं कॉलेज

वापस लौटूँगी तो मेरे लिए नोट्स की व्यवस्था वह लोग करके रखेंगे। मेरी सारी सहलियों ने एक एक विषय अपने जिम्मे ले लिया था कि हम छह महीने की पढ़ाई के नोट्स राधिका के लिए रेडी कर देंगे। उन्होंने जिम्मा लिया और कल तक जो कॉलेज में पढ़ाई हुई थी वो अपडेट करके मुझे दे दिया। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से मेरी मदद की थी। उन सभी का यह भाव देखकर मेरा मन मेरी सहलियों के लिए प्यार, आदर, सम्मान से भर गया। दूसरों की मदद करने के लिए हमें अपने जीवन में कई सारे मौके मिलते हैं। उन्होंने मुझसे पूछा होता कि क्या मेरी अनुपस्थिति में मुझे किसी प्रकार की मदद की ज़रूरत है क्या तो शायद मैं मना कर देती। Generally हम सभी मना कर देते हैं ना। अब मुझे यह एहसास हो रहा है कि हम मदद करने के लिए जब पूछते हैं तो हम मात्र फॉरमेल्टी करते हैं क्योंकि अधिकांश लोग तो मना ही कर देते हैं।

आगे लिखती हैं राधिका कि **यदि हमें किसी के बारे में पता चले किसी को कोई चीज़ की ज़रूरत है तो बजाए उसे पूछने के डायरेक्टली उसकी मदद कर देनी चाहिए**, फिर देखिए आपका जीवन कैसा बन जाता है। आगे लिखती है राधिका कि इस बाबत एक डाल पर तीन बंदर बैठे हुए थे एक ने नीचे जंप करने का डिसाइड किया। अब बताइए डाल पर कितने बंदर बचे ? आपका उत्तर हो सकता है ज़ीरो क्योंकि एक ने जंप किया तो उसके पीछे दूसरे दो ने भी जंप कर लिया। आपका उत्तर दो या तीन भी हो सकता है, यदि आपका उत्तर तीन है तो आप सही है क्योंकि उस बंदर ने डिसाइड तो किया लेकिन जंप नहीं किया, एक्शन नहीं लिया। **क्या हम भी दूसरों की मदद करने से पहले प्लानिंग और डिसाइड करने के बजाय डायरेक्ट एक्शन नहीं ले सकते.? जब तक आप एक्शन में नहीं आएंगे, आपको सफलता नहीं मिलेगी ।**

राज दीदी ने आगे अध्यात्म गुरु मिस्टर राघव के माध्यम से कहा। लिखते हैं राघव कि राधिका ने आपसे कहा कि जैसे ही आपको पता चले कि सामने वाले को मदद की ज़रूरत है तो प्रश्न मत पूछिएगा, प्रश्न यदि पूछना है अपने आपसे पूछना है कि हम किस प्रकार से सामने वाले की मदद कर सकते हैं, ताकि उसकी मदद भी हो जाए उसे खुशी भी मिले और ऐसा तुरंत कर दीजियेगा । राधिका ने कहा कि जब आप ऐसा करते हैं तो आपके जीवन में चमत्कार होने शुरू हो जाते हैं। आप यदि किसी की मदद करते हो तो आप पॉज़िटिव ज़ोन में पहुंच जाते हैं। आप अपने जीवन में पॉज़िटिव चीज़ें अट्रैक्ट करने लगते हो और आपके जीवन में निरंतर चमत्कार होते चले जाते हैं।

मोटिवेशनल स्पीकर रॉबिन शर्मा कहते हैं कि **दिन भर में कम से कम ऐसा कुछ तो करें कि एक व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान आ जाए**। लिखते हैं कि George Bernard shaw जब डेथ बेड पर थे तो उनसे कहा गया कि जाते-जाते दुनिया को आप कुछ संदेश देना चाहते हैं क्या? उन्होंने गर्दन हिलाकर उत्तर दिया कि **जितना हो सके हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए**। आप भी इस चीज़ को अपना लीजिए और देखिए आपका जीवन कैसे खिल उठता है।

गीता के अनुसार प्रेम क्या है? श्रीमद्भागवत गीता में प्रेम के बारे में कहा गया है कि 'प्रेम किसी को पाना नहीं, बल्कि उसमें खो जाना है ! प्रेम वही है, जिसमें त्याग हो और स्वार्थ की भावना नहीं हो। प्रेम में त्याग करने से हम अपनी आत्मा को शुद्ध करते हैं।'

प्रेम ही वह डोर है जिसमें पिरो सभी मानव 'वासुदेव कुटुंब' को सही मायने देते हैं।

मानव के सृजन से लेकर, पालन पोषण, आत्मीयता, अपनों व मित्रों के प्रति सद्भावना सभी प्रेम से उत्पन्न होते हैं।

जैसे जीवन के लिए जल आवश्यक है, प्रेम भी उतना ही आवश्यक है।

प्रेम बिना जीवन नीरस है।

घर हो या बाहर प्रेम ही जीवन को गति प्रदान करता है।

विकास के पथ पर आगे बढ़ने में प्रेम की अहम् भूमिका है।

जिस घर के घरवालों के बीच आपसी प्रेम व स्नेह की धारा बहती है वहाँ सद्भावना की लहरें बहती हैं जो सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होती हैं। सकारात्मक ऊर्जा, सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता को चुंबक की तरह अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। ऐसी स्थिति में परिवार का हर व्यक्ति सातों सुखों से परिपूर्ण जीवन का आसानी से हकदार हो जाता है।

उद्योग हो या संस्था, सरकारी विभाग हो या फेरीवाले, प्रेम की भूमिका सर्वथा महत्वपूर्ण है।

टाटा समूह के श्री रतन टाटा, अपने सिद्धांतों, अपने कर्मचारियों के प्रति प्रेम का साक्षात् उदाहरण हैं और उससे जन्मा विशाल टाटा उद्योग। भारत के विकास में टाटा समूह ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है और निभा रहे हैं।

माननीय प्रधानमंत्री का देश के प्रति अक्षुण्ण प्रेम, अगाध निष्ठा ही उनकी लोकप्रियता की एकमात्र कुंजी है।

आज भारत ने विश्व पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। यह मोदी जी के देश प्रेम का ही परिणाम है। उनके देश के प्रति प्रेम का ही नतीजा है कि वे भारत को हर क्षेत्र में समृद्ध कर राम राज्य का बिगुल बजाना चाहते हैं।

'सबका साथ, सबका विकास' यह नारा भी प्रेम पर ही आधारित है।

वो सब्ज़ी बेचने वाला हो या बड़ी दुकान वाला, लोग उसी के पास जाना पसंद करते हैं जो प्रेम पूर्वक व्यवहार करता है।

'आपका व्यवहार अच्छा तो आपका व्यापार भी अच्छा'

'प्रेम पाने से ज़्यादा देने की चीज़ है'

अगर आप चाहते हैं कि आप जीवन के हर क्षेत्र में सफल हों तो अपने संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को निःस्वार्थ प्रेम करना शुरू कर दीजिए और फिर देखिए कैसे आपके मित्र, सहकर्मी व सभी संबंधित लोग आपके प्रिय बन जाएंगे।

'प्रेम बाँटिये, प्रेम पाइए और प्रगति की राह पर कदम बढ़ाइए।'



## बच्चों की फुलवारी

॥ ५ ॥

इस बार टीम सतयुग ने जिस विषय पर विस्तार से चर्चा की, वह हममें से अधिकांश लोगों के दिल के करीब है। विकास और प्रगति के लिए प्रेम एक अभिन्न अंग है।

प्रेम एक भावना है जो न केवल मानव जगत पर बल्कि पशु जगत पर भी राज करती है।

हमने जंगल बुक में मोगली नामक पात्र की कहानी पढ़ी है, जो अब सभी बच्चों के लिए एक लोकप्रिय शो है, कैसे एक चीते और एक भालू के मातृ प्रेम ने उन्हें इस मानव शिशु का गुरु बना दिया। वे बच्चे को सभी मुश्किलों से बचाते हैं। इस मानव शिशु के लिए पूरे जंगल के जानवरों की सद्भावना और कैसे वे शेरखान नामक बाघ से शिशु को बचाते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि शिशु मानव दुनिया तक पहुँचे। यह प्रेम, सद्भावना और बिना शर्त देने की इच्छा की एक सुंदर यात्रा है।

जब प्रेम बिना शर्त होता है तो एक सुंदर यात्रा शुरू होती है और ब्रह्मांड सराहना में जीवन को समृद्ध और सार्थक बनाने में मदद करता है। कृष्ण के प्रति यशोदा के बिना शर्त प्रेम ने यशोदा को एक साधारण माँ से प्रेम की एक असाधारण प्रतिमूर्ति बना दिया।

कृष्ण के प्रति गोपिकाओं और राधा के प्रेम ने इतिहास में उनका स्थान सुनिश्चित किया और आज उन्हें प्रेम के अवतार के रूप में पूजा जाता है।

प्रेम विकास का अभिन्न अंग है।

प्रेम हमें खुद का बेहतर संस्करण बनने के लिए प्रेरित करता है। स्वयं के प्रति प्रेम हमें अपने भीतर के आत्म से जुड़ने और अपने जीवन के अर्थ या उद्देश्य को समझने में मदद करता है। बिना शर्त प्यार शांति और सुकून लाता है।

प्रेम में बदलाव लाने की शक्ति होती है।

अंगुलिमाल की कहानी, एक खूंखार डाकू जो अपने रास्ते में आने वाले सभी लोगों की छोटी उंगली काट देता था और कैसे बुद्ध ने अपने शांत प्रेम से उसे एक भिक्षु में बदल दिया।

चिकित्सा विज्ञान कहता है कि मनोभ्रंश एक ऐसी स्थिति है जिसका कोई चिकित्सा उपचार नहीं है, बिना शर्त प्यार से इसे बेहतर बनाया जा सकता है। ऐसी कई चिकित्सा स्थितियाँ हैं जिन्हें बिना शर्त प्यार ठीक करने में मदद करता है और हम इसे चमत्कारिक इलाज कहते हैं।

एनआरएसपी, राजदीदी के लिए प्रेम की परिभाषा देखभाल करना है।

आइए हम अपने साथ जुड़े सभी लोगों को बिना शर्त प्यार और देखभाल दें और इस दुनिया को रहने के लिए एक खूबसूरत जगह बनाएँ।



सतयुग के इस अंक में हम सत्संगियों के अनुभवों को उनके कन्फ़ेशंस को साझा करते हैं। वो सत्संगी जिन्होंने जीवन में सत्संग को उतारा अपनी गलतियों को समझा क्षमा याचना की और अपने जीवन में खुशहाली का अनुभव किया। हमारा उद्देश है कि पाठक दूसरों के अनुभवों को पढ़ें और अपने जीवन को सुधारें:-

### १) नारायण रेकी, करुणा रेकी के फायदे

- अ) हमारे नीचे के घर में जो लोग किराए पर रहते थे, वह शिकायत करते थे कि वे लोग रात भर सो नहीं पाते हैं क्योंकि उन्हें चूड़ियों की आवाज़ आती थी, वे लोग छोड़ कर चले गए, फिर दूसरे किरायेदार आये, कुछ दिनों में वो भी कहने लगे कि उन्हें चूड़ियों की आवाज़ आती है। उन्होंने बहुत पूजा पाठ करवाई। मैंने कुछ दिन पहले ही करुणा रेकी सीखी थी, घर आ कर जैसे ही मैंने करुणा रेकी के सिम्बल्स बनाये, २-३ दिनों के भीतर ही वो आवाज़ आनी बंद हो गयी, नीचे किरायेदारों को भी अब कोई आवाज़ नहीं सुनाई दे रही है।
- ब) मेरे पति की काफ़ी बड़ी रक़म किसी के पास थी जो लौटा नहीं रहे थे। प्रार्थनाओं का परिणाम है कि उसमें से बहुत बड़ा हिस्सा मिल गया है, बाकी भी मिल जाएगी। आपको धन्यवाद।

### २) सेवा का फल

मेरी शादी के बाद मैंने मेरी सासु माँ से नकारात्मक व्यवहार किया, क्योंकि मुझे लगता था कि वो मेरी देवरानी को कुछ नहीं कहतीं, सब मुझे ही कहती हैं। परन्तु उनके अंतिम समय में मैंने उनकी बहुत सेवा की, उसका परिणाम यह है कि मेरा बेटा जो बिलकुल पढ़ाई नहीं करता था, वह आज १०-१० घंटे पढ़ाई करता है।

### ३) पुरुष सतसंगी- जैकपॉट - धीमा बोलो मीठा बोलो

पहले हम सब भाइयों में प्रेम नहीं था, सबके बीच में ईगो का भाव प्रबल था, परिणाम था कि हम सभी की समृद्धि रुकी हुई थी।

आपकी धीमा बोलो मीठा बोलो की साधना से हम सब भाइयों में प्रेम हो गया है, और साथ ही समृद्धि भी बरस रही है। आपको कोटि कोटि नमन।

### कन्फ़ेशंस

- १) हमारे संयुक्त परिवार में एक छोटी माँ थीं, मैं उनकी बहुत मदद किया करती थी, एक बार हमारी किसी बात पर बहस हो गयी, तब से मैंने उनके बारे में गलत बोलना शुरू कर दिया, उनके बेटे को भी अपनी माँ के खिलाफ भड़काया, परिणाम- आज मेरी माँ मुझसे बिना किसी बात के नाराज़ हैं। क्षमा दिलवाएं।
- २) मेरी सहेली है उसकी ओर से शेयरिंग। जब वह दिवाली पर गाँव गयी तब सासु माँ को बता दिया था कि हम लोग पहुँचने वाले हैं, तब भी उन्होंने हमारा खाना नहीं बनवाया। सासु माँ ने कहा कि कोई बात नहीं, बाहर चल कर खा लेंगे, बिल मैं भर दूँगी। सबने बाहर जाकर खाना खाया, पर बिल इनके पति ने भरा इस बात को लेकर इन्होंने बहुत हंगामा किया। परिणाम घर आकर सभी लोग ठीक थे, आराम से रात भर सोये, परन्तु इनको फूड पोज़निंग हो गयी एवं ये रात भर परेशान रहीं। क्षमा प्रार्थी हैं।





## प्रेरणादायक वृत्तांत

॥ ५ ॥

### प्रेम का हिसाब किताब

कथा के अनुसार पुराने समय में एक संत अपने शिष्यों के साथ गांव-गांव में घूमकर उपदेश देते थे और लोगों को बुरे कर्मों से बचने के लिए प्रेरित करते थे। इस दौरान वे एक गांव में पहुंचे। उस गांव में एक ग्वालिन दूध-घी बेचती थी। वह सभी लोगों को दूध-घी बराबर तोल कर देती थी, लेकिन गांव के ही एक लड़के को दूध-घी बिना तोले ही दे देती थी।

संत के भक्त ने उनकी कुटिया उसी ग्वालिन के घर के सामने बनवा दी थी। संत ने देखा कि ग्वालिन सभी को दूध-घी बराबर तोलकर देती है, लेकिन एक लड़के को बिना हिसाब-किताब के ही दूध-घी दे देती है।

संत को ये बात समझ नहीं आ रही थी कि वह ग्वालिन ऐसा क्यों करती है? संत ने गांव के लोगों से ये बात पूछी तो मालूम हुआ कि वह ग्वालिन उस लड़के से प्रेम करती है और इसी वजह से वह उसे बिना नापे दूध देती है। ग्वालिन उस लड़के से लेन-देन का हिसाब भी नहीं रखती है।

संत ने अपने शिष्यों से कहा कि ये साधारण सी ग्वालिन जिससे प्रेम करती है, उससे लेन-देन का हिसाब नहीं रखती है, हम भी अपने भगवान से प्रेम करते हैं तो भक्ति में किसी तरह का हिसाब-किताब नहीं रखना चाहिए। मंत्र जाप की संख्या का हिसाब रखने की भी ज़रूरत नहीं है। भक्ति में भगवान के सामने किसी तरह की शर्त भी नहीं रखनी चाहिए। जिस तरह प्रेम में किसी तरह के स्वार्थ की जगह नहीं होती है, ठीक उसी तरह भक्ति में भी किसी तरह का स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

इस कथा की सीख यह है कि जब लोग प्रेम में किसी भी प्रकार के लेन-देन का हिसाब नहीं रखते हैं तो हमें भी भक्ति भी बिना किसी शर्त के करनी चाहिए। भगवान के काम के लिए दिए गए दान का हिसाब नहीं रखना चाहिए।

### मीरा बाई और कृष्ण प्रेम

मीराबाई के बालमन में कृष्ण की ऐसी छवि बसी थी कि किशोरावस्था से लेकर मृत्यु तक उन्होंने कृष्ण को ही अपना सब कुछ माना। जोधपुर के राठौड़ रतनसिंह जी की इकलौती पुत्री मीराबाई का जन्म सोलहवीं शताब्दी में हुआ था। बचपन से ही वह कृष्ण-भक्ति में रम गई थीं।

मीराबाई के बचपन में हुई एक घटना की वजह से उनका कृष्ण-प्रेम अपनी चरम अवस्था तक पहुंचा। एक दिन उनके पड़ोस में किसी बड़े आदमी के यहां बारात आई। सभी औरतें छत पर खड़ी होकर बारात देख रही थीं। मीरा भी बारात देखने लगीं। बारात को देख मीरा ने अपनी माता से पूछा कि मेरा दूल्हा कौन है? इस पर उनकी माता ने कृष्ण की मूर्ति की ओर इशारा कर के कह दिया कि यही तुम्हारे दूल्हा है। बस यह बात मीरा के बालमन में एक गांठ की तरह बंध गई। बाद में मीराबाई की शादी महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज, जो आगे चलकर महाराणा कुंभा

॥नारायण नारायण॥

कहलाए, से कर दी गई।

इस शादी के लिए पहले तो मीराबाई ने मना कर दिया, लेकिन ज़ोर देने पर वह फूट-फूट कर रोने लगीं। शादी के बाद विदाई के समय वे कृष्ण की वही मूर्ति अपने साथ ले गईं, जिसे उनकी माता ने उनका दूल्हा बताया था।

ससुराल में अपने घरेलू कामकाज निबटाने के बाद मीरा रोज़ कृष्ण के मंदिर चली जातीं और कृष्ण की पूजा करतीं, उनकी मूर्ति के सामने गातीं और नृत्य करतीं। उनके ससुराल वाले तुलजा भवानी यानी दुर्गा को कुल-देवी मानते थे। जब मीरा ने कुल-देवी की पूजा करने से इंकार कर दिया तो परिवार वालों ने उनकी श्रद्धा-भक्ति को मंजूरी नहीं दी। मीराबाई की ननद उदाबाई ने उन्हें बदनाम करने के लिए उनके खिलाफ एक साजिश रची। उसने राणा से कहा कि मीरा का किसी के साथ गुप्त प्रेम है और उसने मीरा को मंदिर में अपने प्रेमी से बात करते देखा है।

राणा कुंभा अपनी बहन के साथ आधी रात को मंदिर गए। वह मंदिर का दरवाजा तोड़ कर अंदर पहुंचे और देखा कि मीरा अकेले ही कृष्ण की मूर्ति के सामने परम आनंद की अवस्था में बैठी मूर्ति से बातें कर रही थीं और मस्ती में गा रही थीं। राणा मीरा पर चिल्लाए - 'मीरा, तुम जिस प्रेमी से अभी बातें कर रही हो, उसे मेरे सामने लाओ।' मीरा ने जवाब दिया - 'वह सामने बैठा है - मेरा स्वामी - नैनचोर, जिसने मेरा दिल चुराया है, और वह समाधि में चली गईं। इस घटना से राणा कुंभा का दिल टूट गया, लेकिन फिर भी उन्होंने एक अच्छे पति की भूमिका निभाई और मरते दम तक मीरा का साथ दिया।

हालांकि मीरा को राजगद्दी की कोई चाह नहीं थी, फिर भी राणा के संबंधी मीरा को कई तरीकों से सताने लगे। कृष्ण के प्रति मीरा का प्रेम शुरुआत में बेहद निजी था, लेकिन बाद में कभी-कभी मीरा के मन में प्रेमानंद इतना उमड़ पड़ता था कि वह आम लोगों के सामने और धार्मिक उत्सवों में नाचने-गाने लगती थीं। वे रात में चुपचाप चित्तौड़ के किले से निकल जाती थीं और नगर में चल रहे सत्संग में हिस्सा लेती थीं। मीरा का देवर विक्रमादित्य, जो चित्तौड़गढ़ का नया राजा बना, बहुत कठोर था। मीरा की भक्ति, उनका आम लोगों के साथ घुलना-मिलना और नारी-मर्यादा के प्रति उनकी लापरवाही का उसने कड़ा विरोध किया। उसने मीरा को मारने की कई बार कोशिश की। यहां तक कि एक बार उसने मीरा के पास फूलों की टोकरी में एक जहरीला सांप रखकर भेजा और मीरा को संदेश भिजवाया कि टोकरी में फूलों के हार हैं। ध्यान से उठने के बाद जब मीरा ने टोकरी खोली तो उसमें से फूलों के हार के साथ कृष्ण की एक सुंदर मूर्ति निकली। राणा का तैयार किया हुआ काँटों का बिस्तर भी मीरा के लिए फूलों की सेज बन गया जब मीरा उस पर सोने चलीं।

जब यातनाएं बरदाश्त से बाहर हो गईं, तो उन्होंने चित्तौड़ छोड़ दिया। वे पहले मेड़ता गईं, लेकिन जब उन्हें वहां भी संतोष नहीं मिला तो कुछ समय के बाद उन्होंने कृष्ण-भक्ति के केंद्र वृंदावन का रुख कर लिया। मीरा मानती थीं कि वह गोपी ललिता ही हैं, जिन्होंने फिर से जन्म लिया है। ललिता कृष्ण के प्रेम में दीवानी थीं। खैर, मीरा ने अपनी तीर्थयात्रा जारी रखी, वे एक गांव से दूसरे गांव नाचती-गाती पूरे उत्तर भारत में घूमती रहीं। माना जाता है कि उन्होंने अपने जीवन के अंतिम कुछ साल गुजरात के द्वारका में गुज़ारे। ऐसा कहा जाता है कि दर्शकों की पूरी भीड़ के सामने मीरा द्वारकाधीश की मूर्ति में समा गईं।

## माता पिता का प्रेम

एक गाँव में एक गरीब परिवार रहता था। परिवार में एक माँ और उसका बेटा था। बेटे का नाम मोहन था। मोहन बहुत ही इंटेलिजेंट छात्र था। उसका पढ़ाई में बहुत मन लगता था। वह हमेशा अपने माता-पिता की मदद करता था। एक दिन मोहन की माँ बीमार पड़ गई। उसे अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। मोहन बहुत चिंतित था। वह अपनी माँ के लिए बहुत दुःखी था। वह रात-दिन अपनी माँ के लिए प्रार्थना करता रहता था। मोहन की माँ का इलाज जारी था। लेकिन उसकी तबीयत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। डॉक्टरों ने कहा कि मोहन की माँ की स्थिति बहुत ही नाजुक है।

मोहन की माँ को पता था कि वह मरने वाली है। उसने मोहन को बुलाया और कहा, 'बेटा, मैं अगर मर भी गई तो तुम घबराना मत। तुम पढ़ाई में ध्यान देना और एक डॉक्टर बनना ताकि तुम लोगों की मदद कर सको।'

मोहन की माँ की बात सुनकर उसकी आँखों से आंसू बहने लगे। उसने अपनी माँ को गले लगा लिया और कहा, 'माँ, मैं आपके बिना नहीं रह सकता।'

मोहन की माँ ने कहा, 'बेटा, मुझे पता है कि तुम मुझे बहुत प्यार करते हो। लेकिन तुमको मज़बूत बनना होगा। तुम्हें मेरे सपनों को पूरा करना होगा।' मोहन की माँ की बात सुनकर मोहन का मन मज़बूत हो उठा। उसने अपनी माँ को वादा किया कि वह एक डॉक्टर बनेगा और लोगों की मदद करेगा।

मोहन की माँ की मृत्यु हो गई। मोहन बहुत दुःखी था। लेकिन वह अपने वादे को नहीं भूला। उसने पढ़ाई में और भी मेहनत की।

मोहन ने कड़ी मेहनत करके डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी की। वह एक अच्छा डॉक्टर बना। वह गरीबों और ज़रूरतमंदों की मुफ्त में सेवा करता था।

एक दिन मोहन एक गरीब परिवार के बच्चे का इलाज कर रहा था। बच्चा बहुत बीमार था। डॉक्टर मोहन ने बच्चे का इलाज किया। लेकिन बच्चे की हालत में सुधार नहीं हो रहा था।

डॉक्टर मोहन बहुत चिंतित था। वह सोच रहा था कि वह क्या करे। तभी उसे अपनी माँ की बात याद आई। अपनी माँ की बात याद करके डॉक्टर मोहन का मन मज़बूत हो गया। उसने बच्चे का इलाज जारी रखा।

आखिरकार, डॉक्टर मोहन के इलाज से बच्चे की जान बच गई। बच्चे के माता-पिता डॉक्टर मोहन के सामने धन्यवाद करने लगे।

डॉक्टर मोहन ने कहा, 'यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इस बच्चे की जान बचा सका। मैं अपनी माँ के सपनों को पूरा करना चाहता था। और मैं आज अपनी माँ के सपनों को पूरा कर पाया हूँ।'

डॉक्टर मोहन की कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि माता-पिता का प्यार सबसे सच्चा प्यार होता है। बिना शर्त प्यार होता है। माता-पिता हमेशा अपने बच्चों के लिए भला चाहते हैं। हमें अपने माता-पिता का आदर करना चाहिए और उनके सपनों को पूरा करना चाहिए।

॥ ॐ ॥

## Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

Narayan Narayan



Love is the essence of life. I will reiterate my point through the medium of spiritual guru Raghav-

If you love someone, then you have to respect and pay attention to their likes and dislikes. Instead of being self-centred, focus on those whom you love. When you do this, you start accepting them as they are, the result is that your relationship becomes intimate. Shri Raghav says, the simple way to **show your love is to express it** - If you love someone, then see how you can make that person's life easier. For example, whenever I go out of the house, I take the key of the main door with me so that when I return home late at night, I do not disturb anyone by ringing the doorbell. Along with this, I tell them about my program for the whole day in advance, when I will go out of the house, when I will return home, what breakfast I want to have, what tiffin I will take with me, so that it is convenient for them. We have to have this attitude towards those whom we love, who are our own, that what can I give to the other person and not what will I get. Whatever we get from them, we have to accept it with love. Often, we expect a lot from relationships and think that those who love us a lot will understand our silence too. But we forget that we are all humans, there is no inner self, we have to express our feelings in words. We are made to use this ability given by God which no other living being has. **To make the life of your loved ones easier, give them freedom.** This will save them from having to explain everything all the time. Giving explanations all the time makes one tired, irritated and fills relationships with tension. Raghav completed his talk by saying, **'No matter how much we do for those whom we love, it is still less. You should always have this thought in your mind that what more can I do for them.**

Former President **A P J Abdul Kalam Azad** writes, **'I don't have enough time to love, I don't know how people find time to hate.**

Rest is all good,

R. Modi

॥ नारायण नारायण ॥

## CO-EDITOR

Deepti Shukla 098213276902

## EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562  
Mona Rauka 09821502064

### Main Office

Narayan Bhawan  
Topiwala Compound, station road,  
Goregaon (West), Mumbai.

### Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti  
Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

### Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI (NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	POOJA AGRAWAL	9326811588
GAUHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGRAWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJ	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGRAWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGRAWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGRAWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGRAWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAIPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
HUBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
WARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

### INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRILANKA	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGRAWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGRAWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

## Editorial

Dear readers,

### Narayan Narayan

Since last few days, my mind was a bit disturbed on some issue. While walking, my mind was drooling on the same topic. The pace was slow, and my mind was lacking enthusiasm. Then suddenly I heard the sound-Prem, Prem(love). A mother was calling out to her five-year-old child Prem. I heard Prem, saw Prem; Prem ran into her mother's arms and hugged his mother. My mind was overwhelmed with love by seeing and feeling that love of Prem. The slow pace became fast and my mind was filled with joy and enthusiasm. It was drenched with love. A voice echoed in my ears- I will take care of everything with love.

Love is the basic feeling of our existence. Love is the feeling on which this nature, this world, this entire universe is based.

I just felt like talking to my readers about love this time and Team Satyug got busy in searching, thinking, contemplating and pondering. Whatever I found is presented to you in this issue

You all will always keep brimming with love and will keep filling this earth with love, with these best wishes-

Yours own,  
Sandhya Gupta

### To get

important message and information from  
NRSP Please Register yourself on **08369501979**  
Please Save this no. in your contact list so that you can  
get all official broadcast from NRSP

we are on net



[narayanreikisatsangparivar@narayanreiki](mailto:narayanreikisatsangparivar@narayanreiki)

<sup>e</sup> Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**  
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.  
Call : 022-67847777

|| Narayan Narayan ||





## Call of Satyug

When the creator of the world felt like giving shape to his best creation, man was born. When he created human, the best gift he gave was love. **Pure love.** Love is the hunger of the human soul. To satisfy this hunger, man expands his circle of friends, loved ones and relatives, family and mother. The exchange of love empowers both the parties, the one who loves and the one who receives love. The **greatest power that mankind can ever achieve is the power of love, the power of affection.** Love gives power to work, the power to move forward and take others forward, the power to give your best. Where love is not exchanged, no one gets satisfaction despite having abundance of material comforts and resources. **Nature gives pure love to everyone.** The rising sun does not discriminate as to which flowers it will shed its light on and which not. It spreads its light equally on everyone. That is why, whether it is a rose or a weed, everyone gets equal light. God also gives equal light to all of us with his love. Whatever be the colour of our hair, skin, or eyes, he gives equal love to everyone. When we experience our soul and start seeing ourselves as a soul, we also start loving everyone.

The world today needs a lot of love. Just as we want someone to love us, in the same way we should also give love to the people around us. True love means loving everyone.

Love reflects the feeling of empathy, compassion, and caring for others.

True love is selfless, it does not have any kind of expectation. True love reflects the feeling of sympathy and compassion. True love accepts others as they are. True love gives support and help to others.

True love is based on trust and honesty.

In these ways, true love makes life rich and meaningful.

The experiments and research conducted so far on love conclude that the feeling of love is not only necessary but also essential for human development. Dr. Renee Spitz of New York, America, studied small children in whom the development of destructive tendencies was many times more than the proportion of age. When Dr. Spitz studied their family circumstances, it was found that ninety-nine percent of



them were those who did not get the love of their mother, either their mother had passed away or social circumstances had separated them from their mother. This initial research inspired Dr. Renee Spitz to do a scientific analysis of the effect and reaction of the feeling of love.

For this experiment, she established two institutions with different facilities. In one, children were kept who received motherly love and affection every once in a while. Whenever they called their mother, affection was showered on them. And on the other side, some children were given the best of food, clothing, housing, medical treatment, and valuable means of play, but instead of motherly love, they got only a guardian. How could that single guardian provide love and affection to so many children? Yes, those children sometimes even got scoldings from the nurse. This was the daily routine of those children. After one year, the children of both the places were tested. Their imagination power was psychologically tested, physical development measurement, sociability, sanskar, intelligence, and memory power were tested. A surprising difference was found between the children of both the institutions.

It was found that the children who were given normal food, who did not get good sporting facility, living conditions and other facilities but got mother's love in abundance, their imagination power, memory power, social relations and intellectual capacity developed rapidly. The children of the second institute, who had abundance of material comforts but instead of mother's love there was no affection, their development rate was impacted. Along with the physical development of the children of the first institute, their health and immunity power also improved surprisingly. Out of the 136 children kept in this institute, only one fell ill once in a while whereas in the second institute 38 percent children fell ill.

The experiences of Dr. Fritz Talbot regarding the power and effect of love and affection are no less astonishing. Once Dr. Fritz went to Germany. There he saw the children's hospital of Durolford city. In this hospital, he saw an old woman who was not attractive to look at, but was full of a unique peaceful gentleness and smile. There was always some child playing in her lap. When Talbot saw that woman, he



suddenly became curious to know about her. When he asked the hospital director about the woman's introduction, the director told him that she was Amma! A doctor of doctors. She has only one cure - love. Amma cures even those children whom we declare incurable, for whom we cannot think of any way to treat them.

Scientists of Queen's University, Ontario (Canada) did research on the subject of 'physical effect of love on the mind' and have found surprising results. A woman who treated the rats with love, only 20% of the rats were affected by the poisonous medicine given by her. The woman's love prevented the poisonous medicine from having any effect. The biggest and living proof of the power of love and goodwill is Mrs. Doris Munde, a fifty-year-old woman, physically ordinary like any other woman; but extraordinary in terms of emotions. Mrs. Doris takes out an atlas and sees in which continent is that country, where there is drought or famine. After this she sits down in meditation. She feels with all her heart, with full concentration and focus that- my immense power is dissolving in the clouds. O clouds, come on, you have to rain in that area. O clouds! Here comes that dry area where you have to rain. Rain! Rain!! Rain quickly so that the thirst of the people with parched throats can be quenched. The dry land can become wet. You will have to rain, O clouds, you will have to rain. Come on, rain! Come on, rain.

Doris Munde feels such feelings with all her heart and soul and merges her consciousness with the clouds. It starts raining. People start dancing in joy. Mrs. Doris says that **not only clouds but even God has to bow down in front of prayers done from the heart.**

Development of love and goodwill is the first step in shaping and improving a personality. Without developing feelings and making them noble and mature, a person cannot make spiritual progress.

Love and goodwill are such a wealth that not only leaves its impact on others but also changes them and brings about a change in their inner state.

Love is an essential part of development.

## Wisdom Box (Glimpses of Satsang)



Wisdom Box brings Rajdidi's messages given in Satsangs on life values.

Honesty

Raj Didi shared through story of Mr. Lalit.

Mr. Lalit, a Chartered Accountant by profession, shared a story of his company's MD's honesty. Mr. Lalit said that seeing his honesty he remembered his grandmother. Mr. Lalit writes that his grandmother used to narrate story of a king and his honest cashier. The Cashier used to write all accounts in candlelight because electricity wasn't invented in that era. One evening Cashier was writing his account book two people came to meet him. The Cashier requested them to sit down for some time until he finished his work. When he finished his work, he blew the candle and lit another candle. The two visitors were very much surprised to see that the Cashier blew one candle and lit another candle. They wanted to know the reason. Cashiers replied that when they arrived, he was doing work of the state, so was using the candle bought from the state's expenses. Now talking to them was his personal work, so he lit the candle bought from his own money. The Cashier said if he is using things bought from states money for his personal work, he cannot be called trustworthy. When he does work of state, he uses the candle bought from state's money when he does personal work he uses candle brought from his own money. Mr. Lalit writes that he has heard the story of honesty since his childhood and now he got associated with honest MD, so he has become king of honesty. He has decided to lead his life with honesty. What is your intention...??

**Disadvantage of diverting from the path of honesty:-** Didi explained the consequences, if one diverts from the path of honesty through story of Swami Shri Ramasukhji Maharaj, Swami Ramasukh ji Maharaj was a famous saint. It is said that he used to talk with Shri Krishna bhagwan. Swami ji Maharaj says that if you get

Rs 500 for your work and you honestly do it then you have right on that Rs 500. But if there is a greed within you and you added 300 in that 500 and took Rs 800 for that work, you will be very happy, but what this extra amount of Rs 300 rupees will bring for you?? This extra amount will bring grief, poverty, disease, mourning, sorrow and entire negative package. It is a package deal that you have to pay. Suppose your work was worth Rs 500 and you took



Rs 500 only, it will bring success, progress, joy, abundance. If you adopted loyalty with honesty, this loyalty brings into your life good health and prosperity. Honesty and Loyalty are forms of Maa Lakshmi ji. When you adopt these two things in your life, Maalakshmi's blessings are always upon you... Raj Didi further elaborated her message through

Mr Keshav, one day Mr Keshav went to circus with his two children. When they reached the ticket counter, there was a big poster. It read three to five years half ticket, above five years full ticket. When Keshav saw the board that children under three years are free, but his younger one was three and a half years old, Keshav would have to take half ticket for him and the elder one was five and a half years old, so Keshav would have to take a full ticket for him. Keshav took out Rs500 and asked the man on the counter to give two full tickets and one-half ticket. The person sitting on the counter took a look at both the children and said, how old are they? Keshav said one is three and a half years and other one is five and half years. The man at the counter said that why Keshav was putting so much money, Keshav can just tell the ticket collector that the younger child is 3 years old and elder one is under 5 years. The man at counter suggested Keshav to take one full ticket and one-half ticket only as no one would know the truth. Mr Keshav told the man that younger one knows he is three and a half years old, elder one knows he is five and a half years old. Keshav asked him to give two full tickets and one-half ticket. Today, when children will see their father following honesty, it will be imprinted in their minds throughout their life that their father is honest. Where honesty word comes, automatically positive things are connected with a person. Now it is your choice which path you want to follow.

**Helping others (give your best)** – Radhika shared she took leave of six months from college to prepare for CA exams. It was October 2013. When Radhika joined the college after the leave of six months, she was extremely nervous since she missed college for six months, she was wondering how would she cope up with the studies that were conducted during her absence? How would she make notes? When she reached her bench she saw six notebooks were placed on the bench, all the notebooks were neatly covered and labelled. Radhika was surprised and thought who had put the notebooks on her table. Radhika noticed that all



notebooks had her name, The handwriting of six notebooks was different and since she had not made any such notebooks, then how did the notebooks had her name? Soon her friends reached there.

While talking to them Radhika realised that they had decided to make notes for Radhika during her leave from the college. All her friends took responsibility of preparing notes on one subject. They helped Radhika without any personal interest. Seeing this Radhika was filled with love and respect for her friends. We get many opportunities in our lives to help others. They could have asked Radhika, if she needed some kind of help during her leave from college. Radhika would probably have refused generally we all refuse help from others. Radhika said she realized that when we ask someone if they need help it's just a formality because most people refuse. Radhika further writes, that if we know about someone who needs something, instead of asking him, directly help him, then see how your life becomes easy. Radhika says suppose there are three monkeys sitting on one branch. One decided to jump down, now tell me how many monkeys are left...? Your answer may be 'Zero' because one jumped, so the other two also followed him and jumped. Your answer may be two or three too, if your answer is three then you're right because that monkey decided to jump but did not jump, did not take action. We can also take direct action instead of planning and deciding before helping others? Unless you come in action, you would not get success. Raj Didi further conveyed her message through Spiritual Guru Mr Raghav. Radhika writes that as soon as you know the other person needs help, do not ask questions, if you have to ask yourself how we can help the other person, so that he gets some help and becomes happy do it immediately. Radhika said that when you do this, miracles start to happen in your life. If you help someone, you get into a positive zone. You start attracting positive things in your life and continuous miracles happen in your life. Motivational speaker Robin Sharma says at least do something every day that brings a smile on another person's face. When George Bernard shah was on the death bed he was asked to give some messages to the world.?? He said that we should help others as much as possible. You also follow this thing and see how your life blooms.



## Youth Desk

What is love according to Gita? In Shrimad Bhagwat Gita, it is said about love that 'Love is not about getting someone, but about getting lost in them! Love is that in which there is sacrifice and there is no feeling of selfishness. By sacrificing in love, we purify our soul'.

Love is the thread in which all humans are strung and give the true meaning to Vasudev Kutumb.

From the creation of humans, upbringing, intimacy, goodwill towards loved ones and friends, all arise from love.

Just as water is necessary for life, love is equally necessary.

Life without love is dull.

Whether it is home or outside, love is the only thing that gives momentum to life.

Love plays an important role in moving forward on the path of development.

Where there is a flow of mutual love and affection among the family members, there waves of goodwill flow which are full of positive energy. Positive energy attracts happiness, peace, prosperity, progress, success like a magnet. In such a situation, every member of the family easily deserves a life full of all the seven types of happiness.

Be it an industry or an institution, a government department or a hawker, the role of love is very important.

Mr. Ratan Tata of Tata Group is a living example of his love for his principles, love for his employees and the huge Tata industry born out of it. Tata Group has played and is playing an important role in the development of India.

The unwavering love and unflinching loyalty of the Honorable Prime Minister towards the country is the only key to his popularity.

Today, India has made its unique identity on the world stage. This is the result of Modi ji's patriotism. It is the result of his love for the country that he wants to make India prosperous in every field and aspires to establish Ram Rajya.

This slogan Sabka Saath, Sabka Vikas is also based on love. Be it a vegetable seller or a big shopkeeper, people like to go to the one who behaves lovingly.

If your behavior is good, your business will also be good

Love is more about giving than getting

If you want to be successful in every field of life, then start loving every person you come in contact with selflessly and then see how your friends, colleagues and all related people will become dear to you.

Share love, get love and move on the path of progress

॥नारायण नारायण॥

## Children's Desk

This time the topic we team Satyug chose to elaborate is the topic close to the heart of most of us. **Love an integral part to growth, progress.**

Love is an emotion which is not only rules the human world but also the animal Kingdom.

We have read the story of Mouglian character in the Jungle book which now is a popular show for all children, how the motherly love of an panther, an bear made them mentors for this human child. They protect t the child from all odds. The goodwill of the entire forest animals for this human baby and how they save the baby against Sherkhan the tiger and ensure the baby reaches the human World. It is a beautiful journey of love, goodwill, willing the give unconditionally.

When Love is unconditional a beautiful journey begins, and Universe in appreciation helps to make life enriched and Meaningful. The unconditional love of Yashodha towards Krishna uplifted Yashodha from an ordinary mother to an extraordinary epitome of love.

The love of the Gopikas and Radha towards Krishna ensured there place in history and they are worshipped today as an personification of Love.

Love is an integral part of growth.

Love motivates us to become a better version of ourselves. Love for self helps us to connect with our inner self and understand the meaning or purpose of our life. Unconditional love brings calm and peace.

Love has the power in it to transform. The story of Angulimala, the dreaded dacoit who used to cut the little finger of all those who crossed his path and how Buddha with his serene Love transformed him to a monk.

Medical science says dementia a condition for which there is no medical cure, can be bettered with unconditional love. There are many medical conditions which unconditional Love helps in curing and we call it miracle cure.

The NRSP, Rajdidi definition of Love is to Care.

Let us give unconditional Love and care to all associated with us and make this World a beautiful place to live in.



## Under The Guidance of Rajdidi

In this issue of Satyug, we share the experiences of the Satsangis through their confessions. The Satsangis who brought Satsang into their lives, understood their mistakes, asked for forgiveness and experienced happiness in their lives. Our aim is that the readers read the experiences of others and improve their lives: -

### **Benefits of Narayan Reiki, Karuna Reiki**

- a) The people who used to live on rent in the house below ours used to complain that they could not sleep at night because they could hear the sound of bangles. They left and then other tenants came, in a few days they also started saying that they could hear the sound of bangles. They got a lot of pujas done. I had learnt Karuna Reiki a few days ago, as soon as I came home and made the symbols of Karuna Reiki, within 2-3 days that sound stopped coming, now even the tenants below are not able to hear any sound.
- b) My husband had a large sum of money with someone who was not returning it. As a result of prayers, a large part of it has been recovered and the rest will also be recovered. Thank you.

### **Fruit of service**

After my marriage, I behaved negatively with my mother-in-law, because I felt that she never says anything to my sister-in-law, she says everything to me. But I served her a lot in her last days, the result of which is that my son who did not study at all, studies for 10-10 hours today.

### **Male Satsangi- Jackpot- Speak softly, speak sweetly**

Earlier, there was no love among all of us brothers, the feeling of ego was strong among all, the result was that the prosperity of all of us was stopped.

With your sadhana of speak softly, speak sweetly, there is love among all of us brothers, and prosperity is also pouring down. Millions of salutations to you.

**Narayana blessings for a seven-star life filled with happiness, peace, health, prosperity, progress, success and perfect health to Sushma Taparia and Banwari Lal Taparia on their wedding anniversary (30<sup>th</sup> November)**



### Confessions

- 1) There was a young mother in our joint family, I used to help her a lot, once we had an argument over something, since then I started speaking ill about her, incited her son against his mother too, result- today my mother is angry with me for no reason. Please forgive me.
- 2) Sharing from my friend's side. When she went to the village for Diwali, she had told her mother-in-law that they were about to reach, even then she had not get the food ready for them. Mother-in-law said that it is okay, we will go out and eat, I will pay the bill. Everyone went out and ate, but her husband paid the bill, and for this she created a lot of ruckus. Result- everyone was fine after coming home, slept comfortably the whole night, but she got food poisoning, and she was troubled the whole night. She apologizes.

**Narayan blessings to Ranjita Malpani with Narayan Shakti for earning jackpot amounts in multiples of Rs.56 crore from multiple sources of income with good name and fame.**

**Narayan blessings to Varsha Vaity Progressing, flourishing, prospering in her new business in name of Saarthi Enterprises with good name and fame and earning jackpot amount in multiples of Rs.56 crore.**





॥ ॐ ॥

# Inspirational Memoirs

## DEBIT CREDIT OF LOVE

According to the story, in ancient times, a saint used to roam from village to village with his disciples, preaching and inspiring people to avoid bad deeds. During his travels once he reached a village. In that village, a milkmaid used to sell milk and ghee. She used to give milk and ghee to everyone by weighing, but she used to give milk and ghee to a boy of the same village without weighing it.

The saint's devotee had built his hut in front of the house of that milkmaid. The saint saw that the milkmaid gives milk and ghee to everyone by weighing, but she gives milk and ghee to the one boy without accounting.

The saint was not able to understand why the milkmaid does this? When the saint asked this to the people of the village, he came to know that the milkmaid loves that boy and that is why she gives him milk without measuring it. The milkmaid does not even keep account of the transactions with that boy.

The saint told his disciples that this simple milkmaid does not keep account of transactions with the person she loves. We too love our God, so we should not keep any account in devotion. There is no need to keep account of the number of mantras chanted. We should not keep any condition in front of God in devotion. Just as there is no place for any selfishness in love, similarly there should not be any selfishness in devotion.

The lesson of this story is that when people do not keep account of any kind of transaction in love, we should also do devotion without any conditions. We should not keep account of the donation given for God's work.

**Narayana blessings for a seven-star life filled with happiness,  
peace, health, prosperity, progress, success and perfect health to  
Ayodhya Malpani.**

॥ नारायण नारायण ॥

## Meera Bai and Krishna Love

The image of Krishna was so deeply embedded in Meerabai's childhood mind that from her adolescence till her death, she considered Krishna as her everything. Meerabai, the only daughter of Rathore Ratan Singh Ji of Jodhpur, was born in the sixteenth century. She was immersed in Krishna-bhakti since her childhood.

Due to an incident that happened in Meerabai's childhood, her love for Krishna reached its peak. One day, a wedding procession came to the house of a rich man in her neighbourhood. All the women were standing on the roof and watching the procession. Meera also started watching the procession. Seeing the procession, Meera asked her mother who is my groom? On this, her mother pointed towards the idol of Krishna and said that this is your groom. This thing got tied like a knot in Meera's childhood mind. Later, Meerabai was married to Bhojraj, son of Maharana Sanga, who later came to be known as Maharana Kumbha.

Mirabai initially refused to marry him, but when he insisted, she started crying profusely. At the time of her departure after the wedding, she took with her the same idol of Krishna, whom her mother had told her was her groom.

After finishing her household chores at her in-laws' place, Mira would go to Krishna's temple every day and worship Krishna, sing and dance in front of his idol. Her in-laws considered Tulja Bhavani or Durga as their family deity. When Mira refused to worship the family deity, her family members did not approve of her devotion. Mirabai's sister-in-law Udabai hatched a conspiracy against her to defame her. She told Rana that Mira was secretly in love with someone and that she had seen Mira talking to her lover in the temple.

Rana Kumbha went to the temple with his sister at midnight. He broke the door of the temple and went inside and saw that Meera was sitting alone in front of the idol of Krishna in a state of bliss, talking to the idol and singing in ecstasy. Rana shouted at Meera – 'Meera, bring the lover you are talking to right now in front of me.' Meera replied – 'He is sitting in front – my master – Nainchor, who has stolen my heart, and she went into samadhi. Rana Kumbha was heartbroken by this incident, but still he played the role of a good husband and supported Meera till his death.



Although Meera had no desire for the throne, Rana's relatives started harassing Meera in many ways. Meera's love for Krishna was very personel in the beginning, but later sometimes the bliss of love would overflow so much in Meera's heart that she would start dancing and singing in front of common people and in religious festivals. She would quietly leave the Chittor fort at night and participate in the satsangs going on in the city. Meera's brother-in-law Vikramaditya, who became the new king of Chittorgarh, was very harsh. He strongly opposed Meera's devotion, her mingling with the common people and her carelessness towards womanhood. He tried to kill Meera several times.

Once he even sent a poisonous snake in a basket of flowers to Meera and sent a message to Meera that there were garlands of flowers in the basket. When Meera opened the basket after getting up from her meditation, a beautiful idol of Krishna along with a garland of flowers came out of it. The bed of thorns prepared by Rana became a bed of flowers for Meera.

When the tortures became unbearable, she left Chittor. She first went to Merta, but when she did not find satisfaction there too, after some time she headed towards Vrindavan, the center of Krishna-devotion. Meera believed that she was the Gopi Lalita, who had been reborn. Lalita was madly in love with Krishna. Anyway, Meera continued her pilgrimage, travelling across North India, dancing and singing from village to village. She is believed to have spent the last few years of her life in Dwarka, Gujarat. It is said that in front of a huge crowd of onlookers, Meera merged into the idol of Dwarkadhish.

## Parental love

A poor family lived in a village. The family consisted of a mother and her son. The son's name was Mohan. Mohan was a very intelligent student. He was very interested in studies. He always helped his parents. One day Mohan's mother fell ill. She had to be admitted to the hospital. Mohan was very worried. He was very sad for

||नारायण नारायण||

his mother. He kept praying for his mother day and night. Mohan's mother was undergoing treatment. But there was no improvement in her health. The doctors said that Mohan's mother's condition was very critical.

Mohan's mother knew that she was going to die. She called Mohan and said, "Son, even if I die, you should not panic. You should concentrate on your studies and become a doctor so that you can help people."

On hearing Mohan's mother's words, tears started flowing from his eyes. He hugged his mother and said, "Mother, I cannot live without you."

Mohan's mother said, "Son, I know you love me very much. But you have to be strong. You have to fulfill my dreams." After listening to Mohan's mother, Mohan's mind became strong. He promised his mother that he would become a doctor and help people.

Mohan's mother died. Mohan was very sad. But he did not forget his promise. He worked even harder in his studies.

Mohan worked hard and completed his medical studies. He became a good doctor. He used to serve the poor and the needy for free.

One day Mohan was treating a child from a poor family. The child was very sick. Doctor Mohan treated the child. But the child's condition was not improving.

Doctor Mohan was very worried. He was thinking what he should do. Then he remembered his mother's words. Remembering his mother's words, Doctor Mohan's mind became strong. He continued treating the child.

Finally, the child's life was saved by Doctor Mohan's treatment. The child's parents started thanking Doctor Mohan.

Doctor Mohan said, "It is my good fortune that I could save this child's life. I wanted to fulfill my mother's dreams. And today I have been able to fulfill my mother's dreams." From Doctor Mohan's story, we learn that the love of parents is the truest love. It is unconditional love. Parents always want the best for their children. We should respect our parents and fulfill their dreams.

# GOLDEN SIX

**1) Prayer** -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

**2) Energize Vaults** - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

**3) Shanti Kalash Meditation** – Visualize a Shanti Kalash ( Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra” Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times.”

**4) Value Addition** - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

**5) Energize Dining Table/ Office table** - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

**6) Sun Rays Meditation** - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.



# Finest Pure Veg Hotels & Resorts



**Our Hotels :** Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

**THE BYKE HOSPITALITY LIMITED**

Shree Shakambhari Corporate Park, Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com